बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास पर आर्थिक स्थिति का प्रभाव

रणजीत कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग
महंत दर्शन दास महिला कॉलेज
मुजफ्फरपुर

सारांश

नैतिक व्यवहार में किसी सार्वभौमिक मापदंड की कल्पना नहीं की जा सकती है। समाज की मान्यताओं और अपेक्षाओं के अनुरूप संपन्न किया गया आचरण ही नैतिक व्यवहार हैं। विकास क्रम में बच्चा अपने परिवेश में नैतिक–अनैतिक बातें सीखता है। प्रारंभ से ही शिक्षाविदों का ध्यान बालकों के नैतिक विकास की ओर आकृष्ट हुआ है। बालक में नैतिक मूल्यों के विकास के कारण समझ में प्रखरता एवं विश्वास में दृढ़ता उत्पन्न होती है। आदर्श के प्रति बालक जागरूक हो जाता है। नैतिक व्यवहार अर्जित किया जाता है। यह संचेतना परिवार में विकसित होती है। आर्थिक दृष्टिकोण से भारतीय समाज तीन भागों में विभक्त है – उच्च आर्थिक स्थिति, मध्यम आर्थिक स्थिति तथा निम्न आर्थिक स्थिति। गरीबी और अमीरी दोनों ही परिस्थितियों में पृथक रीति से पले एवं बढ़े बच्चों का नैतिक विकास एक समान नहीं हो सकता है। उच्च एवं निम्न आय समूहों के बालकों के नैतिक विकास एवं माता–पिता के प्रोत्साहन प्राप्तांकों के तुलनात्मक विवेचन से यह प्रमाणित होता है कि निम्न समूह में उच्च समूह की अपेक्षा उच्च नैतिक विकास पर प्रोत्साहन का उच्च प्रभाव पाया जाता है।

महत्त्वपूर्ण शब्दः नैतिक मूल्य, आदर्श, प्रारंभिक बाल्यावस्था, पालन पोषण, प्रोत्साहन।

नैतिकता की व्याख्या समाज एवं संस्कृति के संदर्भ में किया जाता है। इसलिए नैतिक व्यवहार में किसी सार्वभौमिक मापदंड की कल्पना नहीं की जा सकती है। समाज की मान्यताओं और अपेक्षाओं के अनुरूप संपन्न किया गया आचरण ही नैतिक व्यवहार हैं। जो व्यक्ति के अपने सामाजिक मान्यताओं के अनुसार व्यवहृत होता है वह नैतिक कहा जाता है और जो मान्य नियमों का उल्लंघन करता है वह अनैतिक समझा जाता है।

नैतिक व्यवहार जन्मजात नहीं होता बल्कि यह सामाजिक परिवेश में अर्जित किया जाता है। प्रारंभ में बच्चा अपने परिवार, पड़ोस और पाठशाला में नैतिक आचरण की अनौपचारिक शिक्षा पाता है। किंतु किशोरावस्था में पहुंच जाने पर उसके भीतर विवेक का उदय होता है और वह विवेक द्वारा निर्देशित होकर नैतिक व्यवहार की ओर प्रवृत्त होता है। जब नैतिक व्यवहार के बाह्य स्रोत हो जाते हैं और बालक आंतरिक विवेक द्वारा प्रेरित होकर नैतिक बनने का प्रयास करता है तभी उसके भीतर वास्तविक नैतिकता का विकास हो पाता है।

जन्म के समय बच्चा न तो नैतिक होता है और न अनैतिक। उस समय उसका मन एक कोरे स्लेट की तरह होता है। विकास क्रम में वह अपने परिवेश में नैतिक–अनैतिक बातें सीखता है। नैतिक व्यवहार का विकास बालक के समाजीकरण का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य माना जाता है। समुचित नैतिक विकास के साथ–साथ माता–पिता की अभिवृतियों, पालन पोषण की विधियों तथा परिवार के सामाजिक–आर्थिक दशा में सीधा प्रभाव पड़ता है।

नैतिकता की परिभाषा विभिन्न मनोवैज्ञानिकों–समाजशास्त्रीयों के द्वारा दिया जाता है –

प्रारंभ से ही शिक्षाविदों का ध्यान बालकों के नैतिक विकास की ओर आकृष्ट हुआ है।

''सामाजिक समूहों में नैतिक संहिता के प्रति अनुरूपता ही नैतिकता है। इसकी उत्पत्ति लेटिन भाषा के मोरेस शब्द से हुई है जिसका अर्थ प्रथाएँ, लोकरीतियाँ या शिष्टाचार से है।'' – हरलॉक

''निश्चित समय या स्थान के आदर्शों के प्रति अनुरूपता का प्रदर्शन ही नैतिकता है।'' – जोन्स

''परिपक्वता नैतिकता में बच्चों द्वारा सामाजिक नियमों की जानकारी एवं स्वीकृति और मानवीय संबंधों में समानता तथा परिपक्वता जो कि न्याय के आधार में दिलचस्पी है, ये दोनों बातें सन्निहित रहती हैं।'' – पियाजे

''वास्तविक नैतिकता स्वतः चालित होनी चाहिए। उनके कहने का तात्पर्य यह है कि जो दाएँ हाथ द्वारा करना है वह बाएँ हाथ तक को पता नहीं चलना चाहिए।'' – सर हर्बर्ट रीड

''बालक के अंदर सामाजिक और नैतिक मूल्यों का विकास होने के कारण उसकी समझ में प्रखरता और विश्वास में दृढ़ता आ जाती है। आदर्श की वस्तु के प्रति वह जागरूक हो उठता है और आदर्श विरोधी वस्तुओं से घृणा करने लगता है।'' टॉमसन

नारभेग, डी. (2012) के द्वारा किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था में नैतिक मूल्यों का विकास न्यूरो शिक्षा के द्वारा जीवन शैली का निर्धारण होता है। इसकी पुष्टि ब्राउन (1940) के द्वारा भी किया गया है। नारभेग ने पुनः 2014 में भी इस संबंध में अध्ययन किया है।

बालक में नैतिक मूल्यों के विकास के कारण समझ में प्रखरता एवं विश्वास में दृढ़ता उत्पन्न होती है। आदर्श के प्रति बालक जागरूक हो जाता है। आदर्श विरोधी व्यक्ति एवं वस्तुओं से वह घृणा करने लगता है। नैतिक मूल्यों का विकास बालकों में सुरक्षा की भावना में वृद्धि करता है। समरूप परिस्थितियों में बालक निर्भीकता से निर्णय ले सकता है। इसके विपरीत जिन बच्चों में

नैतिकता का विकास नहीं होता है वे समरूपात्मक परिस्थितियों में मानसिक संघर्ष का अनुभव करते हैं तथा उनमें असुरक्षा की भावना प्रबल होती है। एल्डरिच के अनुसार बालक जब भी किसी कार्य को करने की इच्छा करता है तो उसे समाज से स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है जबकि सामाजिक नियमों तथा वैयक्तिक व्यवहार में संघर्ष होता है। नैतिक रूप से परिपक्व व्यक्ति उनके लिए संघर्ष की स्थिति को कुशलतापूर्वक संभाल लेता है।

सी. वी. गुड के अनुसार – (क) उचित–अनुचित व्यवहार के सिद्धांत की प्रणाली जिसमें यथार्थ अथवा आदर्श निहित हो तथा प्रजातांत्रिक नैतिकता, धार्मिक नैतिकता (ख) किसी सिद्धांत या उचित अनुचित नियम का या प्रशिक्षण के संदर्भ में उत्तम आचरण का अनुपालन तथा नैतिकता का प्रशिक्षण।

नैतिक व्यवहार अर्जित किया जाता है। यह संचेतना परिवार में विकसित होती है। यही कारण है कि परिवार में यदि कोई बालक विपरीत आचरण करता है तो यह समझा जाता है कि परिवार उसके लिए उत्तरदाई है।

थॉमसन (1965) का विचार है कि बालक में सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास के कारण ही विश्वास में दृढ़ता और समझ में प्रखरता आ सकती है। सामाजिक नैतिक मूल्यों के कारण ही वह आदर्श विरोधी वस्तुओं के प्रति घृणा और आदर्श वस्तुओं के प्रति जागरूक हो सकता है।

वुडवर्ड (2011) के द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार के आधार पर बच्चों में झूठा विश्वास विकसित हो जाता है। बच्चों में यह क्षमताएँ पाई जाती है कि वह यह बता सके कि उसकी धारणा नैतिक निर्णय की क्षमता को स्वीकार कर, दंड को भी स्वीकार सकता है। उसमें सकारात्मक और नकारात्मक भावनाओं को स्वीकार करने की क्षमता पाई जाती है।

नारभेग (2014) के द्वारा किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि न्यूरो जैविक और मानव के प्रतीक विकास का मूल्यांकन संस्कृतिक और स्वतंत्र रूप से व्यवहार में निर्धारित होता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही बच्चों में सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर नैतिकता का विकास होता है। यह विकास सभी बच्चों में एक समान नहीं पाया जाता है।

आर्थिक दृष्टिकोण से भारतीय समाज तीन भागों में विभक्त है – उच्च आर्थिक स्थिति, मध्यम आर्थिक स्थिति तथा निम्न आर्थिक स्थिति। सुविधा के लिए इन्हें उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग में बाँटा गया है। इन तीनों वर्गों का रहन–सहन, सुख–सुविधा के साधन, बच्चों के लालन–पालन के तरीके एक दूसरे से भिन्न है। भारतीय समाज की आर्थिक विषमता इस चरम सीमा पर है कि जहाँ एक ओर ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें जीवन की मौलिक आवश्यकताएँ भी सहजता से उपलब्ध नहीं है, वहीं दूसरी ओर इस प्रकार के व्यक्ति हैं जिन्हें अपने धन को छिपाने के लिए असंवैधानिक उपायों का आश्रय लेना पड़ता है। गरीबी और अमीरी दोनों ही परिस्थितियों में पृथक रीति से पले एवं बढ़े बच्चों का नैतिक विकास एक समान नहीं हो सकता है। अतः यही तर्कसंगत प्रतीत होता है कि सुविधा भोगी वर्ग के बच्चों का नैतिक विकास असुविधा भोगी वर्ग के बच्चों से श्रेष्ठ होता है। इस संदर्भ में यह प्राक्कल्पना स्थापित किया जाता है कि बालकों के नैतिक विकास पर उच्च आर्थिक स्थिति का प्रभाव निम्न आर्थिक स्थिति की अपेक्षा अधिक अनुकूल पाया जाएगा।

विधिः आर्थिक स्थिति का मापन प्रयोज्यों के परिवार के आर्थिक स्थिति के आधार पर किया जायगा। मापन के लिए एक व्यक्तिगत सूचना पत्र प्रेषित कर गया जानकारी प्राप्त की जायगी जिसे तीन भागों में विभक्त कर देखा जायगा। (क) ₹5000 प्रति माह तक (ख) ₹10000 प्रति माह तक (ग) ₹20000 प्रति माह या उससे अधिक उपर प्रतिमाह आय।

क्षेत्रः मुजफ्फरपुर जिला अन्तर्गत आने वाले परिवार के बच्चों को सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्शः प्रतिदर्श के रूप में एक सौ पचास बच्चों को सम्मिलित कर अध्ययन किया गया है जिसमें उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के पचास की संख्या प्रति समूह रखा गया।

उपकरण एवं मापनीः व्यक्तिगत सूचना पत्र का प्रयोग किया गया जिसमें तीनों ही वर्गों की आर्थिक स्थिति के आधार पर जानकारी प्राप्त की गई।

परिणामः– विभिन्न आय वर्गों को निर्धारित करने के लिए 150 छात्रों के प्रतिदर्श पर व्यक्तिगत सूचना पत्र में अनेकों आय के संबंध में एक प्रश्न पूछा गया था जिसके आधार पर प्रयोज्यों की प्रतिक्रिया प्राप्त कर उच्च, मध्यम एवं निम्न आय वर्ग का निर्धारण हुआ। इन तीनों ही आय वर्गों के बालकों के संबंध में उपर वर्णित प्राक्कल्पना में उच्च आर्थिक स्थिति के बालकों में उच्च नैतिक विकास तथा मध्यम एवं निम्न आय वर्गों के बालकों में निम्न स्तर का नैतिक विकास पाया जायगा। तीनों ही आय समूहों के प्रयोज्यों की संख्या पचास प्रति समूह निर्धारित किया गया। तीनों ही आय समूहों से प्राप्त प्राप्तांकों का पृथक–पृथक मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी–अनुपात प्राप्त किया गया।

इन तीनों ही आय समूहों पर आधारित प्राप्तांक मध्यमानों के पृथक–पृथक अंतरों की सार्थकता जॉचने के लिए पृथक–पृथक टी–अनुपात प्राप्त कर उसका तुलनात्मक विवेचन किया गया जिसका स्पष्ट उल्लेख सारिणी संख्या–1 में वर्णित है।

उच्च, मध्यम एवं निम्न आय समूहों के बालकों के नैतिक विकास का तुलनात्मक विवेचन किया गया हैः

सारिणी संख्या – 1

समूह	संख्या	मध्यमान	प्र. विचलन	टी–अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च वर्ग	140	37.85	10.40	क–ख 4.65	0.01
मध्यम वर्ग	160	47.15	16.55	ख–ग 1.16	असार्थक
निम्न वर्ग	100	44.40	17.8	क–ग 3.30	0.01

तीनों ही आय समूहों के पृथक–पृथक बालकों के नैतिक विकास के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 37.85, 47. 15 तथा 44.40 प्राप्त हुआ। इस परिणाम में यह प्रमाणित होता है कि उच्च आय समूह की अपेक्षा मध्यम आय समूह में उच्च नैतिक विकास पाया जाता है तथा दोनों ही समूहों के माध्यमों के अंतरों की सार्थकता 0.01 स्तर पर सत्यापित होता है। उच्च एवं निम्न आय समूहों के बालकों के नैतिक विकास एवं माता–पिता के प्रोत्साहन प्राप्तांकों के तुलनात्मक विवेचन से यह प्रमाणित होता है कि निम्न समूह में उच्च समूह की अपेक्षा उच्च नैतिक विकास पर प्रोत्साहन का उच्च प्रभाव पाया जाता है। उच्च एवं निम्न दोनों ही समूहों के प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर के आधार पर प्राप्त टी अनुपात 0.01 स्तर पर प्रमाणित हो रहा है।

मध्यम एवं निम्न आय समूहों के बालकों के प्रोत्साहन प्राप्तांकों के मध्यमानों के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट होता है कि मध्यम आय समूहों में उच्च तथा निम्न आय समूहों में निम्न प्रभाव पाया जाता है। लेकिन इन दोनों ही समूहों के मध्यमानों के अंतरों की सार्थकता विश्वसनीयता के किसी भी स्तर पर सत्यापित नहीं हो रहा है। प्राक्कल्पना से संबंधित तुलनात्मक परिणाम निम्नलिखित है –

(क) उच्च समूह में निम्न एवं मध्यम आय समूह में अपेक्षाकृत उच्च बालकों के नैतिक विकास पर माता–पिता के प्रोत्साहन का प्रभाव प्रमाणित होता है।

(ख) उच्च आय समूहों में निम्न तथा निम्न आय समूहों में अपेक्षाकृत उच्च बालकों में नैतिक विकास पर माता–पिता के प्रोत्साहन का उच्च प्रभाव प्रमाणित होता हैं।

(ग) मध्यम आय समूह एवं निम्न आय समूह के बीच बालकों के नैतिक विकास पर माता–पिता के प्रोत्साहन के प्रभाव में कोई खास अंतर स्पष्ट नहीं हो रहा है।

निष्कर्षः– विभिन्न आय वर्गों को निर्धारित करने के लिए 150 छात्रों के प्रतिदर्श पर तीन वर्गों में विभक्त कर अध्ययन किया गया। तीनों है समूहों में प्रतिदर्श के संख्या क्रमशः 50 निर्धारित हुई। प्राप्त निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि उच्च आय वर्ग की अपेक्षा मध्यम एवं निम्न आय समूहों में उच्च नैतिक विकास पाया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उपयुक्त प्रकल्पना विपरीत दिशा में स्थापित हो रही है।

संदर्भ सूचि

Kuppuswamy, B.: A text - Book of Child Behaviour and Development, Vikas Publishing House, Delhi, 1983.
Kohlberg, L.: A Moral Order. Sequence in the Development of Moral Thought, 1963.
Maceoly. F. E.: Moral Values and Behaviour in Childhood, In Socialization ad Society Norton, 1968
Tiwari, G.: Moral Judgment as a Function of Adjustment and Intelligence, Indian Psychological Review, 1975.
Jahoda and Others: Research Methods in Social Relation. New York, 1951.
Freual, S.: *Civilization and its Discontents*. Hogarth Press, London, 1955.
Doherty: Ensuring the Best Start Life Targeting Universality in Early Childhood Development. Quebec: Institute for Research on Public Policy, 2007.
Killen, M. & Rutland, A.: Children and Social exclusion. Morality, prejudice, and group identity. NY Wiley/Blackwell Publishers, 2011.
Docety, J. Michalski, K. J.& Kinzler, K. D.: The contribution of emotion and cognition to moral sensitivity: A neurodevelopmental study. Cerebral Cortex, 2012, 22, 209 – 220,